जाकर आते हैं

(भजन-स्तुति)

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया मुरैना

जाकर आते हैं
(भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥1॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥2॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥3॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएंगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएंगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥4॥
चंदा बिना चकोरों को ज्यों, कितनी पीड़ा हो।
बिना स्वाति की बूँदों जैसे, दुखी पपीहा हो॥

मिट्ठू-मिट्ठू जैसी रटना, भक्त लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥5॥
बिना गाय के बछड़े जैसे, बहुत रँभाते हैं।
बिना श्वास के प्राणी जैसे, जन्म गँवाते हैं॥
बिना आपके हम भी भगवन्, कष्ट उठाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥6॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥7॥
सुबह-सुबह जब आँख खुले तो, दर्श आपका हो।
मुँह खोलें तो होठों पर बस, नाम आपका हो॥
बिना आपके अपना जीवन, सोच न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥8॥
बिना नीर के मछली थोड़ी, सासें भी ले ले।
बिन माता के बालक थोड़ा, जीवन भी जी ले॥
आप बिना हम जियें तो कैसे, सो घबराते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥9॥
तुम्हें भूल के दर-दर भटकें, विरह वेदना से।
अब तो करुणा जल के बादल, जल्दी बरसा दे॥
तेरी छत्र-छाँव में हम भी, आश्रय पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥10॥

हम से तुमरे लाखों तुम सा, कौन हमारा है।
हम हैं कमल आप हो सूरज, अतः पुकारा है॥
जैसा रखना रख लो हम तो, शीश झुकाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥11॥

आप बिना हम आकुल-व्याकुल, पागल के जैसे।
कभी मेघ से कभी पवन से, भेजें संदेशे॥
मिलन महोत्सव अपना हो यह, पत्र भिजाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥12॥

जग के रिश्ते-नाते स्वार्थी, मात्र झमेले हैं।
टूटी कमर हमारी ये तो, दुख के रेले हैं॥
बनकर सगे दगे देते हम, झेल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥13॥

पशुओं में बँधकर दुख पाए, नरकों में बिलखे।
देव देवियों के भोगों में, जीवन भर उलझे॥
नर पर्याय सफल करने को, तुमको ध्याते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥14॥

खेल-खेल में बचपन बीता, तरुणी में यौवन।
हाय! बुढ़ापा है दुखदाई, कहाँ मिलें भगवन्॥
करो हमारी आप सुबह हम, सो ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥15॥

घरवाली घर तक की साथी, दर तक माँ साथी।
पुत्र-मित्र रिश्ते नाते सब, मरघट तक साथी॥

पर प्रभु के सम्बन्ध मोक्ष तक, साथ निभाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥16॥
श्रद्धा से पत्थर मूरत में, प्रभु भगवान दिखें।
श्रद्धा से ही ईश्वर अल्ला, प्रभु श्रीराम मिलें॥
श्रद्धा की आखियाँ खुलवाने, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥17॥

समाधि भावना

जिनेन्द्र प्रभु को करके नमोस्तु, भाव हमारा हो।
नाथ आपके चरण-शरण में, मरण हमारा हो॥
सदा आपकी छत्र-छाँव को, हम ललचाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥18॥
संवेदनमय श्रुत नचनों से, ध्याएँ भगवन् जी।
सदा शास्त्र अभ्याय करें हम, सन्त समागम भी ॥
साधुजनों के गुण गाकर हम, दोष नशाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥19॥
सबसे हित मित प्रिय हम बोलें, आतम को ध्याएँ।
मोक्षमार्ग से प्रेम बढाएँ, प्रभु के गुण गाएँ॥
जब तक मोक्ष न पाएँ तब तक, तुमको ध्याते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥20॥
गुरु प्रभु चरणों में जिनवाणी माँ की गोदि में।
हो संन्यास मरण भव-भव में, सम्यक् बोधि में ॥
जनम मरण के पाप नशाने, तुम्हें बुलाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥21॥

कल्पवृक्ष सम जिन-चरणों की, बचपन से सेवा।
अब तक जो की उसका फल यह, हम चाहें देवा॥
मरण समय तक णमोकर को, भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥22॥
नाथ! आपके चरण हमारे, रहें हृदय मन में।
हृदय हमारा नाथ! आपके, नित हो चरणन में॥
जब तक हम निर्वाण न पाएँ, ये ही ध्याते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥23॥
नाथ! आपकी भक्ति अकेली, सारे पाप हरे।
पुण्य सम्पदा मुक्ति प्रदाता, तन मन स्वस्थ करे॥
हे! जिनवर बस भक्त आपके, कर्म नशाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥24॥
नाथ! आपके चरणकमल तो, भव का भ्रमण हरें।
अतः हमें भी शरण दीजिए, हम यह विनय करें॥
वीतराग सम हुए न हों सो, शीश झुकाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥25॥
नाथ! आपके चरण-शरण हम, भव-भव में पाएँ।
भले दुखी दारिद्र रहें पर, तुम्हें न विसराएँ॥
तुमको पाने दुनियाँ के पद, हम ठुकराते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥26॥
नाथ! आपकी छत्र छाँव तो, हमको प्यारी है।
चरण शरण में मरण समाधि, की तैयारी है॥

करें समाधि मरण यही हम, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥27॥

कष्ट दूर हों कर्म चूर हों, रत्नत्रय पाएँ।
सुगति गमन हो वीर मरण हो, जिनगुण धन पाएँ
'सुव्रत' बोधि-समाधि करने, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥28॥

दर्शन पाठ

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन पाप हरे।
दर्शन है सोपान स्वर्ग का, दर्शन मोक्ष करे॥
साधु वंदना जिनदर्शन से, पाप नशाते हैं।
छिद्र सहित कर में ज्यों जल कण, ठहर न पाते हैं।
जाकर आते हैं...॥29॥

पद्मराग मणि सम उज्ज्वल प्रभु, वीतराग मुख देख।
जिनदर्शन से जन्म-जन्म के, नशते पाप अनेक॥
भव तम नाशक जिनसूरज ही, हृदय खिलाते हैं।
ताप नशाने ही जिनचंदा, सुख बरसाते हैं॥
जाकर आते हैं...॥30॥

जीवादिक सब तत्त्व बताएँ, अष्टगुणी सागर।
नग्न दिगम्बर प्रशांत रूपी, नमो नमो जिनवर॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तुमको ध्याते हैं।
हे!देवाधिदेव जिनेश्वर, विनय दिखाते है॥
जाकर आते हैं...॥31॥

बिना आपके शरण न कोई, शरण आप ही हो।
सो प्रभु करो हमारी रक्षा, रक्षक आप हि हो॥

तीन काल में वीतराग से, देव न पाते हैं।
सो करुणाकर! करुणा कर दो, भक्त चाहते हैं॥
जाकर आते हैं...॥32॥

भव-भव में जिनभक्ति सदा हो, हो जिनभक्ति सदा।
जैनधर्म बिन चक्री का पद, चाहें हम न कदा॥
दुखी दरिद्र रहें पर अपना, धर्म चाहते हैं।
जिनदर्शन से कर्म रोग सब, भक्त नशाते हैं॥
जाकर आते हैं...॥33॥

नाथ! आपके चरण कमल के, दर्शन करने से।
मुनि 'सुव्रत' के दोनों नयना, लगें सफल जैसे॥
तीन लोक के तिलक तुम्हें हम, शीश झुकाते हैं।
भवसागर का जल चुल्लू भर, भक्त बचाते हैं॥
जाकर आते हैं...॥34॥

जिनवाणी स्तुति

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्दों अर्थों की।
आगम शास्त्र पठन पाठन में, हम सब भक्तों की॥
सरस्वती माँ हर त्रुटियों की, क्षमा चाहते हैं।
हमको केवलज्ञान दान दो, भक्त चाहते हैं
जाकर आते हैं...॥

हे श्रुतदेवी! चिंतामणि सम, चिंतित वस्तु दो।
वंदन करने वाले हमको, बोधि समाधि दो॥
निज स्वरूप परिणाम विशुद्धि धर्म चाहते हैं।
मिले मोक्ष सुख सिद्धि संपदा, 'सुव्रत' ध्याते हैं॥
जाकर आते हैं...॥

===